International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 8, Issue 03, March 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

युवाओं के प्रेरणास्त्रोत : नेताजी सुभाष चंद्र बोस

डॉ. रफीक बा. शेख
इतिहास वभागप्रमुख
एस. एस. एन. जे. महा वद्यालयदेवली,जि. - वर्धा.

सारांश :-नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में सबसे अ धक प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" ,का उद्घोष कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनापति, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य आजादी के लए संघर्ष करना था। आजादी के प्रातः काल को देखने के लए कौन जी वत रहेगा और कौन जी वत नहीं रहेगा। इसके बजाए,उनके लए मात्र यही बात सर्वोच्च थी क भारत को आजादी का सूर्य शीघ्र ही देखने का सौभाग्य प्राप्त हो। आजादी के प्रातः काल के लए वह सर्वस्व न्यौछावर करने के लए तत्पर थे।

' कसी राष्ट्र के लए स्वाधीनता सर्वोपरि है।' इस महान मूल मंत्र को शैशव और नव युवाओं की नसों में प्रवाहित करने तथा तरुणों की सोई आत्मा को जगाकर देशव्यापी आंदोलन देने और युवा वर्ग की शौर्य शक्ति उद्घा सत कर राष्ट्र के युवकों के लए आजादी को आत्मप्रतिष्ठा का प्रश्न बना देने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने स्वाधीनता महासंग्राम के महायज्ञ में प्रमुख पुरोहित की भू मका निभाई।

प्रास्ता वक-नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी के मानस में राष्ट्र का एक वराट स्वरूप था। जितना चंतन, मनन राष्ट्र की स्वतंत्रता के लए उन्होंने कया, उतना ही राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को अक्षुण्य रखने के लए भी कया था। नेताजी को भारत की आजादी प्राणों से भी अ धक प्यारी थी। वे उसे प्राप्त करने के लए और देश में एकता के वातावरण का निर्माण करने के लए हर संभव प्रयत्न करते रहे। यद्य प नेताजी के प्रयास भारत को आजादी दिलाने के लए सफल नहीं हो सके, तथा प उनके प्रयासों ने भारत की आजादी के प्रश्न को अंतर्राष्ट्रीय प्रश्न बना दिया था। उन्होंने भारत के बाहर अथक प्रयास कर भारत को आजादी दिलाने के प्राप्ति हेतु वह सभी कुछ कया,जो उस परिस्थिति में संभव था। उनके कुछ आलोचक उन्हें नाजी व फा सस्ट कहते हैं, परंतु वे अपने देश से असीम प्रेम करते थे और उसकी स्वतंत्रता के लए कसी भी प्रकार का त्याग करने हेतु तत्पर थे। उनके इसी त्याग के कारण आज तक भी वह भारतीय जनता और युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

युवाओं के शक्ति के समर्थक:-

सुभाष चंद्र बोस का मानना था क, युवा वर्ग प्रकृति से आदर्शवादी, परिश्रमी और सदैव नवीन वचारों को जानने के लए उत्सुक रहता है। वह भारत की स्वतंत्रता के लए युवा आंदोलन के प्रति पूरी गंभीरता से वचनबद्ध थे। सन 1928 में महाराष्ट्र प्रांतीय सम्मेलन में उन्होंने युवाओं को संबो धत करते हुए कहा, "इस देश के युवाओं में 'जागृति' इस दौर के सर्वा धक आशावादी लक्षणों में से एक है।" उनका मानना था क भारत की स्वतंत्रता गांधी और जनता के अग्रणी राजनीतिज्ञों की रूढ़िवादी और अ क्रयाशील नीतियों द्वारा नहीं बल्कि भारत की स्वतंत्रता के लए बल प्रयोग करने वाले क्रांतिकारियों और राजनीतिक चेतना से युक्त युवा वर्ग के प्रयत्नों और ब लदानों से प्राप्त होगी।

नेताजीने आत्म वश्वास,भाव-प्रवणता,कल्पनाशीलता और नवजागरण के बल पर युवाओं में राष्ट्र के प्रति मुक्ति व इतिहास की रचना का मंगल शंखनाद कया । मनुष्य इस संसार में एक निश्चित,निहित उद्देश्य की प्राप्ति, कसी संदेश को प्रचारित करने के लए जन्म लेता है। जिसकी जितनी शक्ति, आकांक्षा और क्षमता है, वह उसी के अनुरूप अपना कर्म क्षेत्र निर्धारित करता है। नेताजी के लए स्वाधीनता 'जीवन-मरण' का प्रश्न बन गया था। बस यही श्रद्धा, यही आत्म वश्वास जिसमें ध्वनित हो वही व्यक्ति वास्त वक सृजक है। नेता जी ने पूर्ण स्वाधीनता को राष्ट्र के युवाओं के सामने एक ' मशन' के रूप में प्रस्तुत कया और युवाओं से आह्वान कया क जो इस मशन में आस्था रखता है, वह सच्चा भारतवासी है। बस उनके इसी आव्हान पर ध्वजा उठाएं आजादी के दीवानों की आजाद हिंद फौज बन गई। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था,"व्यक्ति को कार्य करने के लए धरातल प्रदान करता है। उन्नतिशील,शक्तिशाली जाति और पीढ़ी की उत्पत्ति के लए हमें ही बेहतर वचार वाले पथ का अवलंबन करना होगा क्यों क जब वचार महान, साहसपूर्ण और राष्ट्रीयता से ओतप्रोत होंगे तभी हमारा संदेश अंतिम व्यक्ति तक पहुंचेगा। आज युवा वर्ग में वचारों की कमी नहीं है,ले कन इस वचार जगत में क्रांति के लए एक ऐसे आदर्श को सामने रखना ही होगा, जो वद्युत की भांति हमारी शक्ति आदर्श और कार्ययोजना को मूर्त रूप दे सकें। नेताजी ने युवाओं में स्वाधीनता का अर्थ केवल राष्ट्रीय बंधन से मुक्ति नहीं बल्कि आ र्थक समानता, जातिभेद, सामाजिक अ वचार का निराकरण, सांप्रदायिक संकीर्णता त्यागने का वचार मंत्र भी दिया।

महात्मा गांधी के कुशल नेतृत्व में असहयोग आंदोलन का आरंभ हुआ। इस आंदोलन में सुभाष बाबू ने महात्मा गांधी के साथ युवाओं का नेतृत्व कया। उनके वचारों से प्रेरित होकर भारत के युवा वर्ग ने आंदोलन में स क्रय भू मका निभाई। इसके अतिरिक्त गांधी जी के स वनय अवज्ञा आंदोलन में भी सुभाषचन्द्र बोस ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लया। जब असहयोग आंदोलन अपने चरम सीमा पर था तो गांधीजी ने चौरी-चौरा घटना के कारण आंदोलन को स्थ गत कर दिया। गांधी जी के इस कदम से सुभाष बाबू को गहरा आघात लगा इस संदर्भ में उन्होंने कहा," गांधीजी का यह कदम अत्य धक निराशाजनक है, जब आंदोलन अपने चरम सीमा पर था तो ऐसे समय आंदोलन को स्थ गत करने का कोई औ चत्य नहीं बनता। भ वष्य में भारत को इसके भयानक परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।"
अपने इस क्रांतिकारी वचारों की बदौलत सुभाष बाबू अब सारे भारत के युवाओं के लए मार्गदर्शक का कार्य कर रहे थे।

नेताजी ने स वनय अवज्ञा आंदोलन में पूरी स क्रयता के साथ भाग लया था, ले कन गांधीवादी वचारधारा और कार्यप्रणाली को वे स्वीकार नहीं कर पाए। सन 1939 में कॉन्ग्रेस का अ धवेशन त्रिपुरी में होना तय हुआ। ले कन

कांग्रेस के नेताओंसे मतभेद के कारण सुभाष बाबूने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और मई 1939 में फॉरवर्ड ब्लॉक नाम से अलग दल बना लया। इससे नेताजी का तेजस्वी रूप खुलकर सामने आया। देश में उन्हें वीर नेता के रूप में माना जाने लगा। 12 अक्टूबर 1939 को उत्तर प्रदेश के लोगों के अनुरोध पर वे लखनऊ पधारे तो उनका भव्य जुलूस निकाला गया। इसी दौरान गंगा प्रसाद मेमोरियल हॉल में हुई वराट सभा में नेताजी ने कहा, "आजादी मांगी नहीं जाती, ली जाती है और हम उसे प्राप्त करके ही दम लेंगे।" उनके इन ओजस्वी वाक्यों ने उन्हें यूवकों का हृदय सम्राट बना दिया।

इसी तरह संयुक्त प्रांत छात्र सम्मेलन इलाहाबाद में दिए गए एक संदेश में उन्होंने युवाओं को संबो धत करते हुए कहा, "आज के वद्यार्थी कल के नेता है और राष्ट् की आशाओं और आकांक्षाओं के जीवंत रूप है। राष्ट्र के सबसे अ धक आदर्शवादी हिस्से का प्रतिनि धत्व करते हैं। पूरी दुनिया के छात्र एक बड़े भाईचारे के सहभागी है। इसी भाईचारे की भावना को फैलाना अपना कर्तव्य समझ कर उन्हें सभी भारतीयों को एक सूत्र में बांधने की को शश करनी चाहिए।"

स्वामी ववेकानंद की तरह सुभाष चंद्र बोस भी सदैव युवा आंदोलनों से जुड़े रहे। वे नौजवानों को इतना शक्तिशाली बनाना चाहते थे क वे भारत की स्वाधीनता की मांग, पुरजोर ढंग से उठा सके। "सुभाषचंद्र बोस ने जो सपना आजाद भारत के लए देखा था। वह कहीं ना कहीं आज भी अधूरा है।" परंतु सुभाषचंद्र बोस के आशावाद की तरह एक आशावाद की झलक यहां भी है। अगर हारे तथा दबे-कुचले जर्मनी और जापान इतने शीघ्र ताकतवर राष्ट्र बनकर चमक सकते हैं, तो यकीनन सुभाषचंद्र बोस का सपना एक दिन जरूर सच होगा और भारत 'प्रखंड अखंड भारत' शक्तिशाली और समृद्ध बनेगा।

निष्कर्ष:-

सुभाषचंद्र बोस ने स्वतंत्र भारत का जो स्वप्न देखा था, वह स्वप्न अभी पूरा नहीं हुआ है। भारत को आजादी मल चुकी है, पर उस आजादी को सहझकर रखने की आवश्यकता है। सुभाषचंद्र बोस का व्यक्तित्व,उनके वचार अपनी पढी के लए तो प्रेरणा के अक्षय स्त्रोत थे ही, साथ ही वे आज की पीढ़ी के लए भी आलोक की शुभ करण है और कल की पीढ़ी के लए भी ब लदान और उत्सर्ग की अमर गाथा बनेंगी। भारत की आजादी नेताजी जैसे वीर महापुरुषों के त्याग-ब लदान के कारण प्राप्त हुई। उनमें देश के प्रति इतना प्रेम और अदम्य साहस था क,उनके व्यक्तित्व और कार्य की महत्ता भारतीय इतिहास में सदैव प्रतिष्ठित रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1) डॉ आराधना सुभाष चंद्र बोस के व्यक्तित्व और कृतित्व, राहुल पब्लि शंग हाउस शास्त्री नगर, मेरठ, प्रथमसंस्करण 2012, पृष्ठ 24,45,47,48,55,158,159,167,176,188
2) प्रो.माला ठाकुर, m.hindi.webdunia.com
3) Essay on Netaji Subhas Chandra Bose in Hindi google.com (Brainly.in)
4) ndiwebdunia.com